IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बी.एड्.प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन

* डॉ० संजय कुमार

* प्रवक्ता (शिक्षाशास्त्र) ,ओबरा इण्टरमीडिएट कालेज ,ओबरा सोनभद्र ,उत्तर प्रदेश

पर्यावरण एवं उसका संरक्षण भारतीय संस्कृति में रचा-बसा है । भारतीय धर्मग्रन्थ ,सांस्कृतिक आयोजनो ,धार्मिक कृत्यों ,लोकाचारों में पर्यावरण का संरक्षण एवं संबर्द्धन हेतु पर्याप्त उल्लेख एवं प्रावधान करते हैं ,किन्तु अति-भौतिकतावादी मानसिकता एवं मूल्यों के क्षरण नें पर्यावरणीय असंतुलन के आत्मघाती परिणामों को आमंत्रण दिया है ।

सम्प्रति विश्व का प्रत्येक देश पर्यावरण प्रदूषण से उत्पन्न बिभीषिका से से जूझ रहा है,साथ ही इसके व्यावहारिक समाधान भी खोज रहा है । उल्लेखनीय है कि इंग्लैंड में 1972 में पर्यावरणीय शिक्षा के निमित्त राष्ट्रीय संघ का निर्माण हुआ । इसके साथ ही USA में Environmental Protection and Conservation Act-1972 का निर्माण इस दिशा में एक गंभीर प्रयास था । पर्यावरण की सुरक्षा एवं विकास पर विश्व के तमाम राष्ट्रों ने प्रत्यक्ष –अप्रत्यक्ष प्रयास किये हैं जिनमें मांट्रियल प्रोटोकाल –1987,हेलसिंकी प्रोटोकाल-1989,लन्दन प्रोटोकाल -1990,कोपेनहेगन समिट-1992,रियो अर्थ समिट-1992,क्योटो समिट-1997,एम्सटर्डम पर्यावरण सम्मलेन व मराकस सम्मलेन -2001 आदि प्रमुख है । भारत में पर्यावरण संरक्षण की दिशा में वर्ष 2004 में राष्ट्रीय **पर्यावरण नीति** का निर्माण किया गया है । अनेक दिवसों,सप्ताह एवं प्रेरक कार्यक्रमों का आयोजन पर्यावरण की दशा एवं दिशा में प्राण फूंकने के लिए किया जा रहा है ।

पर्यावरण संरक्षण के तमाम प्रयासों के बाद भी पर्यावरणीय संकट जैसे – भूमंडलीय तापन , जैव-विविधता का संकट , ग्रीनहाउस इफ़ेक्ट आदि बढ़ता जा रहा है । इनके मूल में है ,मानवीय स्वार्थ एवं अज्ञानता ।

पर्यावरणीय संकट के आत्मघाती कहर से बचने का एक मात्र उपाय है – पर्यावरण सम्बर्द्धन,और यह केवल पर्यावरणीय शिक्षा /जागरूकता से ही सुनिश्चित किया जा सकता है । राष्ट्रीय शिक्षा नीति की धारा 8.15 यह स्पष्ट करती है – **"पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करने की बहुत आवश्यकता है और यह जागरूकता बच्चो से लेकर समाज के सभी आयु,वर्गो एवं क्षेत्रो में फैलनी चाहिए"** । इसको मूर्त्त रूप देने के लिए पर्यावरणीय शिक्षा को जन-जन तक पहुंचाने के सर्वश्रेष्ठ माध्यम (शिक्षक) को आगे आना होगा ।

उपर्युक्त को ध्यान में रखकर शोधकर्त्ता ने सेवापूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले बी.एड्. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता का स्तर देखने का प्रयास किया है क्योंकि भविष्य के पर्यावरणवादी एवं सरंक्षक नागरिको के निर्माणकर्त्ता शिक्षक प्रशिक्षुओ (बी.एड.) में उच्चस्तरीय जागरूकता स्तर भावी लक्ष्य की सफलता की पूर्व शर्त है ।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :

1. ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि के बी. एड् . प्रशिक्षुओ की पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन करना ।
2. कला एवं विज्ञान पृष्ठभूमि के बी. एड् . प्रशिक्षुओ की पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन करना ।
3. लैंगिक विभिन्नता (महिला एवं पुरुष) के आधार पर बी. एड् . प्रशिक्षुओ की पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन करना ।

शोध अध्ययन की परिकल्पना :

1. ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि के बी. एड् . प्रशिक्षुओ की पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है ।
2. कला एवं विज्ञान पृष्ठभूमि के बी. एड् . प्रशिक्षुओ की पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है ।
3. लैंगिक विभिन्नता (महिला एवं पुरुष) के आधार पर बी. एड् . प्रशिक्षुओ की पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है ।

शोध विधि :

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण प्रविधि का प्रयोग किया गया है । आँकड़ो के संग्रहण के लिए फैजाबाद मण्डल के महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी. एड्. प्रशिक्षुओ (553) को चुना गया है ।आँकड़ो के संग्रहण के लिए डॉ० सीमा धवन द्वारा निर्मित प्रश्नावली **Environmental Awareness Test for Teacher (EATT)** का प्रयोग किया है । इसकी विश्वनीयता (अर्द्धविच्छेद – सम –विषम विधि से) 0.76 एवं विश्वनीयता गुणांक 0.87 है । वैधता के लिए विषयगत एवं संरचनात्मक वैधता सुनिश्चित की गयी है । प्रश्नावली में 0.15 -0.93 कठिनाई स्तर के पदों को समाहित किया गया है, साथ ही पर्याप्त विभेदक (1.96) भी है ।

सांख्यिकी विधियाँ :

शोध के आँकड़ो के विश्लेषण एवं व्याख्या के लिए आवश्यकतानुसार CR/t –Test का प्रयोग किया गया है । समस्त परिकल्पनाओं का परीक्षण 0.01 सार्थकता स्तर पर किया गया है ।

आँकड़ो के विश्लेषण से प्राप्त परिणाम :

तालिका -1
विभिन्न वर्गों के बी.एड्. प्रशिक्षणार्थियो में पर्यावरणीय जागरूकता की तुलना

क्र.सं.	प्रतिदर्श	N	M	प्रमाप विचलन S	D	σ_D	t	परिणाम (0.01 स्तर)
1	ग्रामीण पृष्ठभूमि के प्रशिक्षणार्थी	276	52.72	8.58	1.87	0.71	2.63	सार्थक
	शहरी पृष्ठभूमि के प्रशिक्षणार्थी	277	54.59	8.09				
2	कला वर्ग के प्रशिक्षणार्थी	327	51.97	8.03	4.12	0.67	6.15	सार्थक
	विज्ञान वर्ग के प्रशिक्षणार्थी	226	56.09	7.62				
3	महिला प्रशिक्षणार्थी	228	49.31	6.79	6.96	0.62	11.22	सार्थक
	पुरूष प्रशिक्षणार्थी	325	56.27	7.81				

शोध अध्ययन का परिणाम एवं व्याख्या .

1. 0.01 सार्थकता स्तर (99% विश्वस्तता) पर यह पाया गया है कि ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि के बी. एड्. प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता में पाया गया अन्तर सार्थक है । प्राप्त मध्यमानो के अवलोकन से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि शहरी पृष्ठभूमि के प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता, ग्रामीण पृष्ठभूमि के बी. एड्. प्रशिक्षणार्थियों से अधिक है ।

   मापनी के श्रेणीकरण तालिका के अवलोकन से यह भी प्रकाश में आता है कि दोनो ही पृष्ठभूमि (ग्रामीण एवं शहरी) के प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरणीय जागरूकता पर प्राप्त मध्यमान एक समान स्तर (**अच्छा /good**) के हैं ।
2. 0.01 सार्थकता स्तर पर यह देखा गया कि कला एवं विज्ञान वर्ग के बी. एड्. प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण विषयक जागरूकता में प्राप्त अन्तर सार्थक है । प्राप्त मध्यमान यह भी स्पष्ट करते है कि विज्ञान वर्ग के बी. एड्. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता ,ग्रामीण पृष्ठभूमि के बी. एड्. प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में **उच्च** है ।

   मापनी के श्रेणीकरण तालिका के अवलोकन से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि कला वर्ग के बी. एड्. प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरणीय जागरूकता पर प्राप्त मध्यमान **औसत्त स्तर (Average)** के है , जबकि विज्ञान वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरणीय जागरूकता पर प्राप्त मध्यमान **(अच्छा /good)** स्तर का पाया गया ।
3. 0.01 सार्थकता स्तर पर पाया गया कि लैंगिक भिन्नता (महिला/पुरूष) के आधार पर बी. एड्. प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरणीय जागरूकता में पाया गया अन्तर सार्थक है । प्राप्त मध्यमानो की तुलना से यह तथ्य उद्घाटित होता है कि बी. एड्. के पुरुष प्रशिक्षणार्थियों मे पर्यावरणीय जागरूकता समान धरातल पर महिला प्रशिक्षणार्थियों से अधिक है ।

   मापनी के श्रेणीकरण तालिका से तुलना करने पर यह तथ्य प्रकाश में आता है कि महिला बी. एड्. प्रशिक्षणार्थियों का पर्यावरणीय जागरूकता पर प्राप्त मध्यमान **औसत (average)** स्तर का ही है जबकि पुरुष बी. एड्. प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता पर प्राप्त मध्यमान **अच्छा (Good)** स्तर का पाया गया ।

उपर्युक्त आँकड़ो के विश्लेषण से यह पता चलता है कि ग्रामीण की तुलना में **शहरी**,कला वर्ग की शैक्षिक पृष्ठभूमि की तुलना में **विज्ञान वर्ग** एवं महिला की तुलना में **पुरुषों** में पर्यावरण विषयक जागरूकता अधिक पायी गयी ,फिर भी प्राप्त मध्यमान अपने आदर्श स्थिति (100 %) के सापेक्ष काफी कम है । सार्वभौमिक शिक्षा व्यवस्था, शिक्षा में तकनीकी, जन- जागरूकता आदि का प्रयोग,गाँवों के सापेक्ष शहरों में आज भी ज्यादा होता है । साधन सम्पन्नता ,पूर्ण शैक्षिक परिवेश एवं शिक्षा के साथ समाज में पर्यावरणीय जागरूकता का संचयी प्रभाव शहरी लोगो पर अधिक पड़ता है जिसका परिणाम शहरी लोगो (बी.एड्. प्रशिक्षणार्थियों) पर पर्यावरणीय जागरूकता के उच्च स्तर के रूप में प्रतिविम्बित हो रहा है । इसी प्रकार द्वितीय परिकल्पना के संदर्भ में सर्वविदित है कि विज्ञान वर्ग की अध्ययन सामग्री, शिक्षणविधि आदि कला वर्ग से अधिक पर्यावरण उन्मुख होती है । अन्तिम परिकल्पना पर प्राप्त परिणाम वस्तुत: पुरूष वर्ग को प्रारम्भिक जीवन स्तर से अपेक्षाकृत अधिक अवसर मिलने , पर्यावरण कार्यक्रमो में सहभागिता का अवसर एवं बाह्य पर्यावरणीय क्रिया-कलापों में अपेक्षाकृत अधिक सक्रियता का प्रतिविम्बन मात्र है ।

स्पष्ट है कि तकनीकी का अनुप्रयोग, जनजागरूकता,शैक्षिक परिवेश,अध्ययन सामग्री में पर्यावरण विषय की सम्पन्नता,बाह्य उन्मुखता एवं पर्यावरण से सम्पर्क आदि का प्रभाव पर्यावरणीय शिक्षा विषय जागरूकता पर अधिक पड़ता है । अत: उच्चस्तरीय पर्यावरणीय जागरूकता के आदर्श को प्राप्त करने के लिए इन सभी का सम्यक उपयोग एवं व्यवस्था सुनिश्चित किया जाना चाहिए । स्पष्ट, सटीक एवं निष्ठापूर्ण प्रयास से प्राप्त पर्यावरणीय जागरूकता से अनुप्राणित हो हमारा पर्यावरण पुन: आदर्श स्थिति को अवश्य प्राप्त हो सकेगा ।

सन्दर्भ :

1. गुप्ता ,एस.पी. : **सांख्यिकी विधियाँ** ,इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन ,1997 .
2. सक्सेना ,ए.बी. : **पर्यावरणीय शिक्षा (शिक्षण के सन्दर्भ में)**,नई दिल्ली : आर्य बुक डिपो ,1998.
3. पाण्डेय ,के.पी. : **शैक्षिक अनुसन्धान** ,वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन ,1998.
4. ओझा , एस.के. : **पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण** , इलाहाबाद : बौद्धिक प्रकाशन 2007 .
5. Dhawan and Others : "Environmental Education in Pre-Service Teacher Education" Journal of Indian Education,XXXI ,2 (August 2005).
6. विज्ञान प्रगति (मासिक) **जैवविविधता विशेषांक** ,वर्ष :59 ,अंक : 1, जून 2010.
7. योजना (जलवायु परिवर्तन विशेषांक), वर्ष 52 ,अंक -6, जून 2008.